कुँवरसिंह गुसांई

वर्षा रानी

वर्षा रानी

जल्दी आओ वर्षा रानी।
रिमझिम-रिमझिम लेकर पानी।।
तुम बिन धरती सूख रही है।
जीवन शैली रुठ रही है।।
चहु दिशा में उड रही धूल।
बागों में नहीं खिल रहे फूल।।
बिन वर्षा के कली न खिलती।
कंकड़ पत्थर बन गये शूल।।
सूरज से गर्मी बरस रही है।
जल को धरती तरस रही है।।
बंजर बन गये अब तो खेत।
उड़ती मानो मरुभूमि की रेत।।
अन्दर गर्मी बाहर गर्मी।
ऊपर गर्मी नीचे गर्मी।।
कहीं न मिलता मन को चैन।
मुश्किल बन गये दिन अरु रैन।।
ताल गधेरे सूख चुके हैं।
अपनी रौनक भूल चुके हैं।।
हरियाली जग से विरत हुई है।
मानो दुनिया ठहर गई है।।
सभी की नजरें टिकी तुम्ही पर।
सबकी आशा रही तुम्ही पर।।
तुम आओगी जल बरसेगा।
धरा को उसका रंग मिलेगा।।
तुम आते तो जग हर्षाता।
तुम बिन सारा जग मुरझाता।।
आओ जल्दी जग हर्षाओ।
और न हमको अब तरसाओ।।
जब सावन के मेघ बरसते।
टर-टर मेंढक सारे करते।।
मोर नाचते शेर गरजते।
धरती के सब जीव हर्षते।।
तुम आओगे बीज उगेंगे।
तुम आओगे फूल खिलेंगे।।
हरियाली का रंग बिखरेगा।
धरती का श्रृंगार बनेगा।।
धरा के इन्द्रदेव तुम्ही हो।
धरा पर वरूणदेव तुम्ही हो।।
धन्य-धन्य है तेरा पानी।
शत-शत वन्दन वर्षा रानी।।

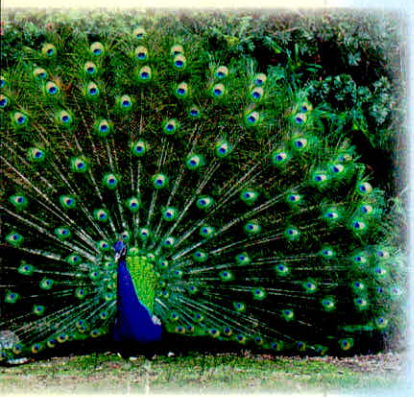

जल महिमा

जल से जंगल जल से मंगल जल जीवन आधार।
जल से सजती धरती रानी जल से है संसार।।
जल ब्रहमा जल विष्णु शिव है जल देवों का सार।
जल के बिना न कोई जीता जल जीवन आधार।।
तपती धरती तपता जंगल जल से पाये शोभा अपार।
जल ना बरसे तो हो जाये सूना यह संसार।।
रवि से सागर तपे साथ तो भाप बने सहकार।
नभ जाये अरू फिर बरसे तो सुखी बने संसार।।
जल पर काशी जल से मथुरा जल पर ही हरिद्वार।
जल पर संगम तीरथ सारे जल मुक्ति का द्वार।।
जहां न जल का साया पड़ता मचता हाहाकार।
जल महिमा है सबसे न्यारी जल बिन सब बेकार।।
भस्म हुए जब श्राप से पुरखे भगीरथ के साठ हजार।
गंगाजल के स्पर्श मात्र से उतरे भवसागर के पार।।
आज गंगाजल की धारा झेले प्रदूषण की मार।
कैसे होगा भला जीव का सोचें सौ-सौ बार।।
जल में डाले कूड़ा करकट यही बढ़ा है व्यभिचार।
जल का रूप इसी से बिगड़ा बढ़ा प्रदूषण भार।।
जल का रूप बिगड़ता है तो जल ही प्रलयकार।
इसको कैसे स्वच्छ रखें हम करें सोच विचार।।
जल से सागर जल से नदियां जल से ताल हजार।
जल से वर्षा जल से झरने जल पानी की धार।।
जल जीवन का रक्षक है जल बिन कष्ट हजार।
बूंद-बूंद की कीमत समझो जल से करलो प्यार।।

संपर्क करें:
कुँवरसिंह गुसांई
प्रभारी प्रधानाचार्य
राजकीय इंटर कॉलेज भगवती
चमोली, उत्तराखंड
मो.नं. 9568006366

जल है... तो कल हैं इसे व्यर्थ न बहाएं।

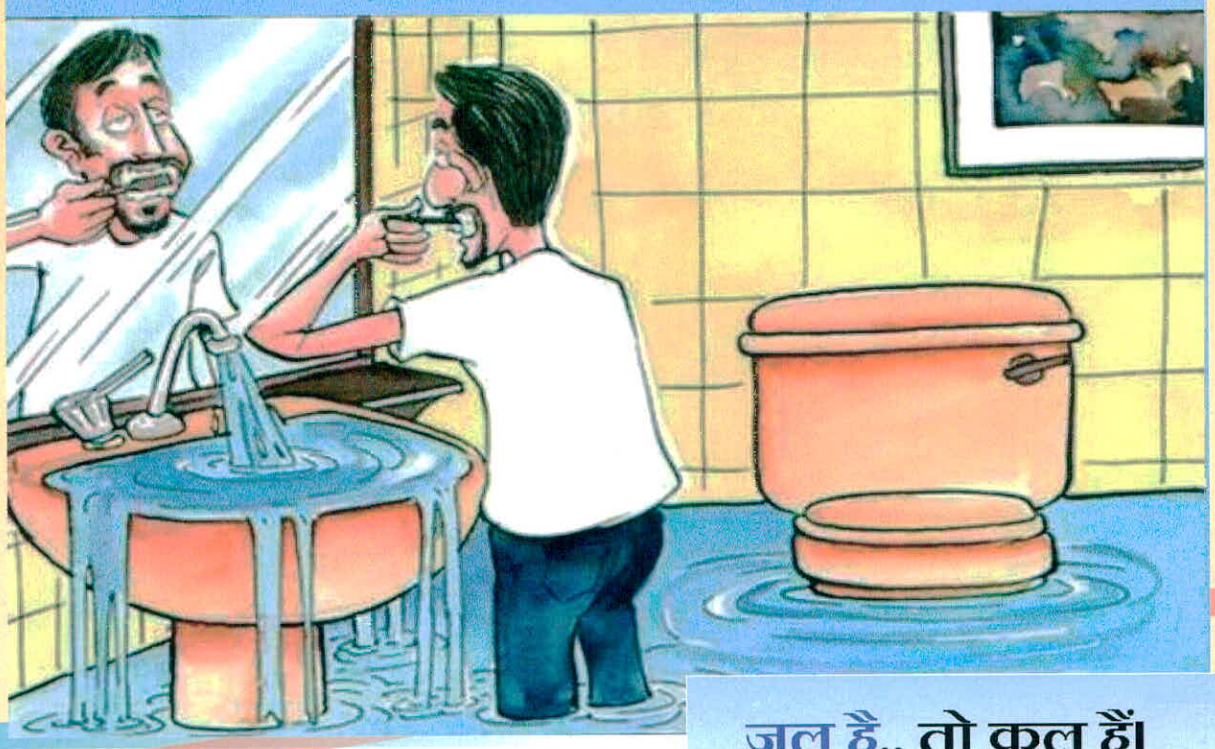

ज़ल है.. तो कल हैं।
पानी कुदरत का अनमोल उपहार है, इसे व्यर्थ ना बहाएं।

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

हम सबने यह ठाना है, भारत स्वच्छ बनाना है !